शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

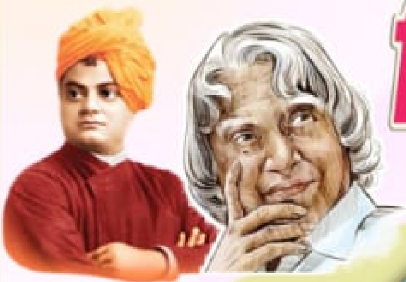

हमारी फसलें

शैक्षिक कविताओं का संकलन

काव्य मंजरी

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। # 9458278429

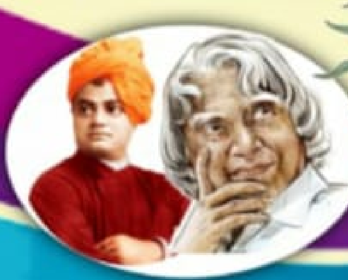

हमारी फसलें

01

गन्ना (ईख)

मीठे रस की छड़ी है गन्ना,
'ईख' नाम दूजा कहलाए।
'Sugarcane' है नाम अंग्रेजी,
उत्तर-प्रदेश में ये लहराए।।

गन्ना नकदी फसल कहाती,
पशुओं का चारा भी बनाते।
रस से इसके सिरका बनता,
चीनी, गुड़ और खांड बनाते।।

'सैकरम ऑफिसीनेरम' सुनिए,
इसका है वैज्ञानिक नाम,
ताजा रस पीने से होते,
स्वास्थ्य को लाभ तमाम।।

छिलका कहलाता है खोई,
बड़े काम में इसको लाते।
जैव ईंधन का एक रूप है,
कागज इससे लोग बनाते।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

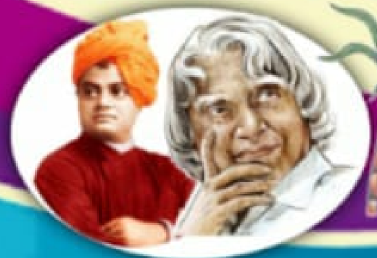

हमारी फसलें

02

चावल

भात-खिचड़ी सहित बनते,
जिससे अनेक पकवान।
दाल के संग जो चावल खाते,
फसल है उसकी धान।।

धान फसल है एक प्रमुख,
जिससे चावल निकाला जाता।
भारत सहित कई देशों में,
चाव से चावल खाया जाता।।

गर्म और नम जलवायु हो,
तो उगता यह हर हाल में।
सबसे ज्यादा होता चावल,
राज्य "पश्चिमी बंगाल" में।।

मई की शुरुआत में करते,
तैयारी सारे किसान।
मानसून जैसे ही आता,
रोप दिए जाते हैं धान।।

रचना- पूनम गुप्ता “कलिका”
(स०अ०) प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, जनपद अलीगढ़

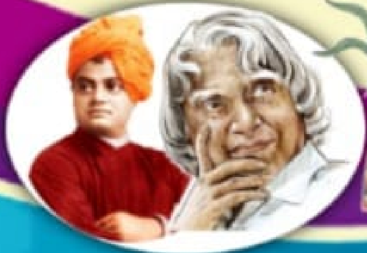

हमारी फसलें

03

कॉफी

कॉफी है एक पेय पदार्थ,
बनता पेड़ के बीजों से।
इथियोपिया में ईजाद हुआ था,
भरपूर होता कैफ़ीन से।।

एनर्जी को बूस्ट करे हमारी,
मोटापे को घटाती है।
डायबिटीज को नियन्त्रित कर,
लीवर को स्वस्थ बनाती है।।

तनाव दूर करे कैफ़ीन,
अल्जाइमर में लाभ पहुँचाए।
कई तरह की प्रजातियाँ इसकी,
पूरे विश्व में पायी जाए।।

ब्राजील देश है बड़ा उत्पादक,
भारत का छठवाँ स्थान है।
सिवेट है सबसे महंगी कॉफी,
विश्व भर में जिसका नाम है।।

रचना
डॉ०नीतू शुक्ला(प्र०अ०)
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1,
सिकंदरपुर कर्ण,उन्नाव

हमारी फसलें

04

बाजरा

आओ बच्चों तुम्हें बताएँ,
मशहूर हुआ है कैसे बाजरा।
अन्य प्रजातियाँ भी होती इसकी,
जैसे रागी और फाक्सटेल बाजरा।।

छोटे-छोटे इसके बीज हैं होते,
कई देशों में खाया जाता है।
दक्षिणी, पूर्वी अफ्रीका व अन्य देशों में,
पर्ल मिलेट से जाना जाता है।।

पोषक तत्वों का इसमें संगम होता,
इसलिए बहुत उपयोगी होता है।
मैगनीज, फोस्फोरस, प्रोटीन आदि से,
मिलकर बाजरा बना होता है।।

खरीफ फसल में ये बोया जाता,
कम पानी में पैदा हो जाता है।
हाइब्रिड प्रोएग्रो 9001 बाजरा,
सबसे अच्छी किस्मों में जाना जाता है।।

रचना:- शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ०प्रा०वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

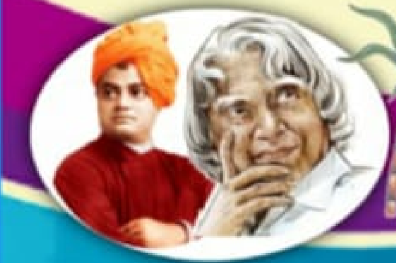

हमारी फसलें

05

कपास

बड़े काम का ये पौधा होता,
बाग-बगीचों में भी मिलता।
कितना मोहक, प्यारा लगता,
उजला-उजला जब है खिलता।।

नकदी फसल कपास कहाती,
रोजगार व्यापार चलाती।
बहुत काम में रुई है आती,
सूती वस्त्रों का रूप सजाती।।

हरा भरा सा कितना सुन्दर,
लगा कपास खेत के अन्दर।
झाड़ीनुमा हो ऊँचा मध्यम,
उजला सोना कहते हैं हम।।

भारत में है इतिहास पुराना,
रुई से घर-घर दीप जलाना।
खेती इसकी देश में होती,
समृद्ध किसानों को है करती।।

रचना

सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
क० वि० अकबापुर,
पहला, सीतापुर

Mission Shikshan Samvad

हमारी फसलें

सिंघाड़ा

भारतवर्ष का फल विशेष,
उगता है जो तालाबों पर।
नाम सिंघाड़ा प्रचलन में है,
तैरता पानी की सतहों पर।।

जल में फैली लता में लगते,
तिकोने आकार के फल।
सींग सदृश्य कांटे है होते,
छिलका मोटा कोमल फल।।

जलकुम्भी के जैसे पत्ते,
जड़ें कीचड़ तक जाती हैं।
फल कच्चा भी खाया जाता,
गिरी व्रत मे खायी जाती है।।

संस्कृत में शृंगाटक कहते,
waterchestnut अंग्रेजी नाम।
देश के हर प्रान्त में उगता,
औषधि में भी आता काम।।

रचना
सीमा मिश्रा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

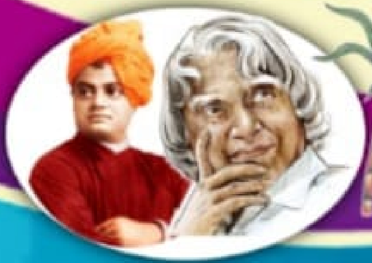

हमारी फसलें

07

पान

हरा-हरा यह पान का पत्ता,
सबको भाता पान का पत्ता।
गुणों की खान ये पान का पत्ता,
फिर भी बिकता कितना सस्ता।।

आयुर्वेद में है ये उपयोगी,
इससे दमा के ठीक हों रोगी।
हो आतिथ्य या पूजन थाली,
पान बिना सब खाली-खाली।।

भीट बना जो खेती करते,
तम्बोली जन उनको कहते।
मीठे पान सभी को भाते,
मुख शुद्धि को प्रयोग में लाते।।

बगुला, बनारसी, महोबा पान,
देसावरी और कपूरी पान।
साँची मिलकर पाँच प्रजाति,
नागर बेल, पर्ण कहलाती।।

रचना-
रश्मि शुक्ला (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय बेथर
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

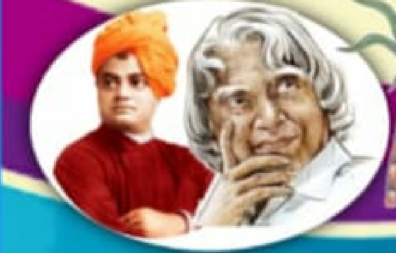

हमारी फसलें

08

प्याज

प्याज है एक वनस्पति,
सब्जी में इसका प्रयोग।
उपजती 1789 हेक्टेयर में,
170 देशों में है उपयोग।।

भारत में है महाराष्ट्र प्रथम,
विश्व में चीन में अधिकतम।
भारत करता इसका निर्यात,
इसका तीखा होता स्वाद।।

एलाइड प्रोपाइल से तीखापन,
कन्द इसका है सर्वगुण सम्पन्न।
चार-पाँच माह में फसल होती तैयार,
यह करती है 'लू' का उपचार।।

बलुई दोमट मिट्टी में होती तैयार,
12 से 15 सिंचाई की दरकार।
भारत उत्पादन में दूसरा देश,
अपने आप में है प्याज विशेष।।

रचना
भुवन प्रकाश (प्र०अ०)
प्रा० वि० पिपरी नवीन
मिश्रिख, सीतापुर

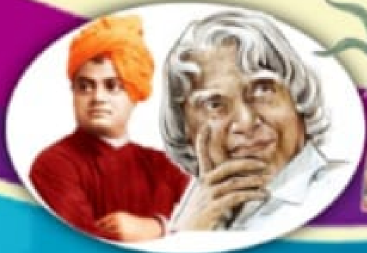

Mission Shikshan Samvad

हमारी फसलें

09

सरसों

बसन्ती फूलों संग सरसों लहलहाती,
इन्हें देख प्रकृति खिलखिलाती।
रबी की तिलहनी फसल ये होती,
ब्रेसिका कम्प्रेस्टिस भी कहलाती।।

काले व पीले दो रंग की होती,
दोमट मिट्टी इसको है भाती।
दिसम्बर में यह बोयी जाती,
मार्च-अप्रैल में काटी जाती।।

सीमित जल से यह सींची जाती,
फसल में कम लागत है आती।
साल में दो बार उगायी जा सकती।
पायनियर, श्रीराम हैं इसकी प्रजाति।।

बीजों से गुणकारी तेल है देती,
त्वचा को रोग मुक्त है बनाती।
खाने में सेहत व स्वाद भर देती,
आयुर्वेद में खूब काम है आती।।

रचना- रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर
वि० क्षेत्र- जानी, मेरठ

हमारी फसलें

10

ज्वार

यवनाल, जूंडी, यवाकार,
हैं ज्वार के कुछ नाम।
अन्न की अपेक्षा आती,
चारे में अधिक काम।।

सवा करोड़ एकड़ भूमि में,
यह फसल बोयी जाती।
इसके लिए 40 से 60 सेमी,
वर्षा भी जरूरी होती।।

भारी व हल्की दोमट मिट्टी में,
इसकी खेती अच्छी होती।
राजस्थान, पंजाब राज्यों में,
इसकी पैदावार अधिक होती।।

इसके डंठल और पौधे,
चारे के काम हैं आते।
यह जानवरों का सबसे,
महत्वपूर्ण एवं पौष्टिक चारा होते।।

रचना- इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

Mission Shikshan Samvad

हमारी फसलें

11

चना

नवम्बर में यह बोया जाए,
भाजी के रूप में खाया जाए।
कुछ दिन में जब फल आ जाए,
बिरवा, होरा तब बन जाए।।

फसल कटी चना घर आता,
कई रूप में खाया जाता।
बेसन, दाल, आटा बनाकर,
इसे उपयोग में लाया जाता।।

सेहत और स्वाद से भरपूर,
व्यंजन बनाएँ इससे खूब।
हलुआ बनाओ, पकौड़ी बनाओ,
या रोटी बनाओ स्वादिष्ट खूब।।

अंकुरित चना जब हम खाएँ,
इससे सेहत भरपूर पाएँ।
कैलोरी, प्रोटीन, फाइबर से युक्त,
बी० पी० से रखता है मुक्त।।

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

Mission Shikshan Samvad

हमारी फसलें

12

मूँग

बिगना रेडिएटा वानस्पतिक नाम,
भारत मूँग का जन्म स्थान।
लेग्यूमिनेसी कुल का पौधा,
पौष्टिकता में मूँग का नाम।।

वर्ष में होती दो हैं बुवाई,
जून-जुलाई में खरीफ की बुवाई।
चना, सरसों, मटर कटाई के बाद,
मार्च-अप्रैल में ग्रीष्म की बुवाई।।

बहुप्रचलित लोकप्रिय मूँग दाल,
नियन्त्रित करती है रक्तचाप।
एन्टीमाइक्रोबियल, एन्टीऑक्सीडेन्ट,
एन्टीट्यूमर, एन्टीडायबिटिक दाल।।

उपयुक्त है 25 से 35 डिग्री तापमान,
उत्पादक पंजाब, हरियाणा, राजस्थान।
मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश का,
मूँग उत्पादन में है प्रमुख स्थान।।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

Mission Shikshan Samvad

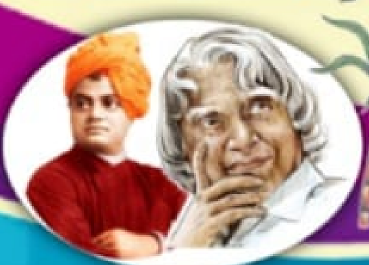

हमारी फसलें

13

मूँगफली

सर्दी का मौसम लगता,
हमको बहुत ही प्यारा।
जब मिलता मूँगफली,
का साथ हमें प्यारा।।

इसकी बुवाई जून-जुलाई,
माह की शुरुआत में होती।
हल्की दोमट मिट्टी इसकी,
फसल के लिए उतम होती।।

Arachis hypogaea

वैज्ञानिक नाम

मूँगफली हैं पोषक तत्वों ,
की बहुत ही बड़ी खान।
प्रमुख तिलहन फसलों,
मे हैं इसकी बड़ी ही शान।।

मूँगफली का मूल स्थान ,
ब्राजील, पेरु माना जाता ।
पीनट, बटर, मिठाई, सूप,
मे इसका प्रयोग भी होता। ।

रचना- प्रतिमा उमराव (स0 अ0)
उच्च प्रा0 वि0 अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

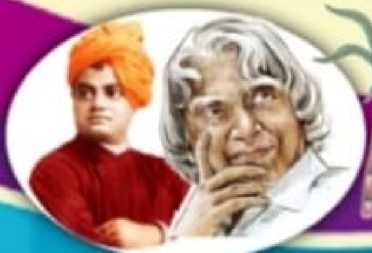

Mission Shikshan Samvad

हमारी फसलें

तिल

तिल होता गुणों की खान,
दूर करे रक्त विकार।
कमर दर्द और गठिया में,
होता इससे उपचार।।

महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात,
उत्तर प्रदेश में होता उत्पादन।
हल्की रेतीली, दोमट मिट्टी में,
इसकी खेती होती सर्वोत्तम।।

मानसून आने से पहले,
होती खेत की जुताई।
जुलाई के द्वितीय सप्ताह तक,
होती तिल की बुवाई।।

फलियों में दाना पड़ने पर होती सिंचाई,
फलियाँ, पत्तियाँ पीली पड़ने पर होती कटाई।
सूखी फलियों से तिल की होती प्राप्ति,
शेखर, प्रगति, कृष्णा हैं इसकी प्रजाति।।

रचना-
स्नेह लता (स०अ०)
प्रा० वि०- नारंगपुर
वि० क्षे०- परीक्षितगढ़
जिला - मेरठ

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

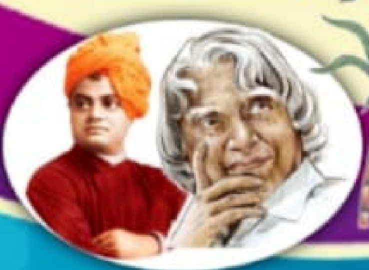

हमारी फसलें

मक्का

मक्का 'अनाज की रानी' के
नाम से भी पुकारी जाती है।
ये लगभग हर तरह की
मिट्टी मे उगायी जाती है।।

ये नब्बे प्रतिशत पानी और
उपजाऊ शक्ति बनाए रखती है।
कच्चे माल के तौर पर तेल,
स्टार्च जैसे उद्योग मे लगती है।।

यह फसल उत्तर प्रदेश, राजस्थान,
बिहार, मध्यप्रदेश मे उगती है।
यह फसल गर्मी और बसन्त के
मौसम मे बोयी जा सकती है।।

इसके कई नये प्रकार जैसे
स्वीट कॉर्न, बेबी कॉर्न भी हैं।
इसकी मशहूर किस्में PMH1,
PMH2, प्रभात और केसरी हैं।।

रचना
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

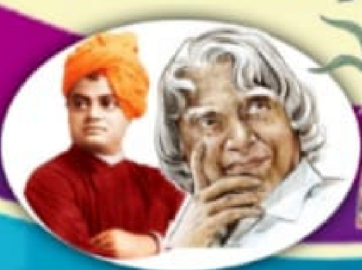

हमारी फसलें

16

अरहर

स्वास्थ्य की दृष्टि के अन्तर्गत होती,
दाल का सेवन प्रतिदिन बहुत जरुरी।
भारत में तीन हजार वर्ष पूर्व से होती,
मिट्टी में अरहर तुअर दाल की खेती।।

इसकी उत्पत्ति स्थल अफ्रीका माना जाता है,
भारत के महाराष्ट्र में इसका उत्पादन होता है।
वर्षा के प्रारम्भ होते ही इसे बोया जाता है,
नवम्बर और दिसम्बर में इसे काटा जाता है।।

अरहर का पौधा बहुवर्षीय होता है,
दलहन प्रोटीन का सस्ता स्रोत होता है।
कम वर्षा वाले क्षेत्रों की महत्वपूर्ण दाल है,
मिट्टी में नाईट्रोजन को बाँधना इसका काम है।

काब्रोहाईड्रेट, लोहा, कैल्शियम रासायनिक,
जैसे तत्व भी इसमें भरपूर पाया जाता है।
शरीर की वृद्धि और प्रतिरक्षा क्षमता बढ़ाने में,
अरहर दाल को पौष्टिक दाल पुकारा जाता है।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

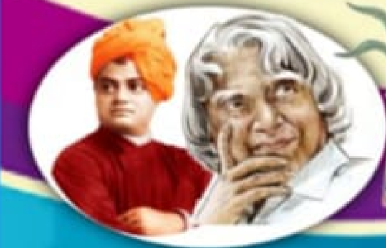

हमारी फसलें

17

गेहूँ

गेहूँ के दो मुख्य घटक,
कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन।
बसन्त ऋतु में होता है ये,
फसल है शीतकालीन।।

वैज्ञानिक नाम है ट्रिटिकम,
विश्व भर में उगाया जाता।
रोटी, दलिया, केक, पास्ता,
बनाने के काम में आता।।

चीन के बाद भारत में,
गेहूँ की फसल खूब होती।
अच्छी पैदावार के लिए,
दोमट मिट्टी सही रहती।।

पंजाब, हरियाणा, यू०पी०,
राज्य गेहूँ के बड़े उत्पादक।
मनुष्य के जीवन यापन हेतु,
गेहूँ की फसल है आवश्यक।।

रचना- मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

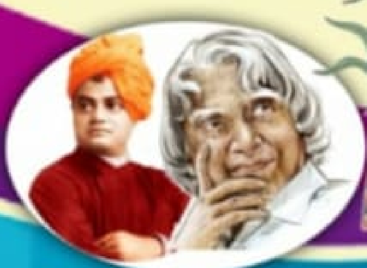

हमारी फसलें

आलू

सब्जी का राजा कहलाता,
गोल-मटोल सभी को भाता।
सब्जियों की बढ़ाए शान,
आलू ये सब्जी की जान।।

आलू की कचौड़ी स्वाद बढ़ाती,
समोसा, टिक्की सबको भाती।
आलू बिन खाना सब सूना,
ये मिलता तो स्वाद हो दूना।।

इसका प्रत्येक कन्द है,
पोषक तत्वों का भण्डार।
जो बच्चों से लेकर बूढों तक,
एक उत्तम पोष्टिक आहार।।

आलू है एक रबी की फसल,
जो शरदऋतु बोयी जाती।
उपज क्षमता है सबसे ज्यादा,
अकाल नाशक फसल कहलाती।।

रचना
हेमलता गुप्ता (स० अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

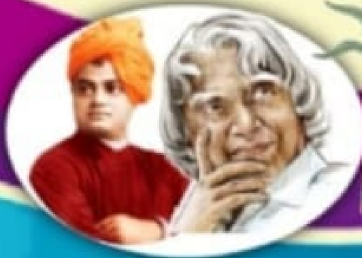

हमारी फसलें

19

उड़द

बिगना मूंगो है वैज्ञानिक नाम,
शेखर, पंत उर्दू, किस्म बढ़ाएँ शान।
आयरन की कमी को करती दूर,
फाइबर, मैग्नीशियम, पोटेशियम भरपूर।।

साल में तीन बार बोयी जाती,
शुष्क जलवायु में फसल तैयार हो जाती।
हरी खाद उड़द से मिल जाती,
मृदा की उर्वरता बढ़ जाती।।

रेतीली, दोमट, मध्यम मिट्टी में खेती होती,
अम्लीय, क्षारीय मिट्टी उपयुक्त ना होती।
तांबा, प्रोटीन पाया जाता है,
वजन बढ़ाने में सहायक होता है।।

हलवा, कचरी, पापड़ बनते,
त्योहारों की शान बढ़ाते।
जब उड़द दाल के भल्ले बनते,
बच्चों के चेहरे खिल उठते।।

रचना-
मोना शर्मा (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय पूठी
परीक्षितगढ़, मेरठ

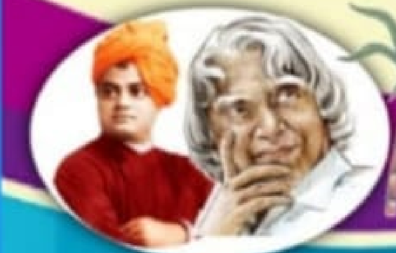

हमारी फसलें

20

जूट

खरीफ की फसल यह होती है,
दो-तीन बार निराई होती है।
जूट मार्च तक बोया जाता,
और अक्टूबर में पक जाता।।

जूट की खेती गर्म और नम,
जलवायु में अच्छी होती है।
दोमट मिट्टी उपयोगी होती,
जो पानी को सोख लेती है।।

बोरे, कालीन, दरियाँ, परदे,
सजावट का समान बनता है।।
इसके डण्ठल से चारकोल और
गन पाउडर भी बनता है।।

कई देशों में उत्पादन होता है,
जिनमें भारत प्रथम होता है।
इससे बना समान अन्य देशों,
को भी खूब निर्यात होता है।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
वि० क्षेत्र- सरधना, मेरठ

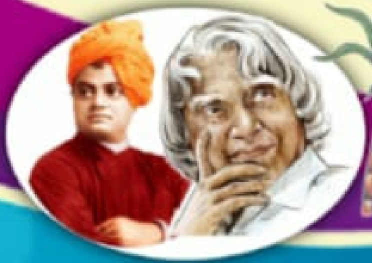

हमारी फसलें

21

पटसन

पटसन एक द्विबीजपत्री,
रेशेदार पौधा होता है।
इसका तना बहुत पतला,
और बेलनाकार होता है।।

पत्तियों को तोड़, गठ्ठर बाँध,
पानी में सड़ने को ड़ाल देते।
कूटकर रेशे अलग करते,
बना बोरी, दरी, तिरपाल लेते।।

पटसन से मजबूत चिकने,
सजावटी सस्ते सामान बनते।
इसका रेशा सफेद नहीं होता,
निम्न कोटि के कपड़े भी बनते।।

इसका रेशा आद्रताग्राही होता,
नदी वाले इलाकों में उगाया जाता।
जून से अक्टूबर तक फली आने पर,
इसकी फसल को काटा जाता।।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

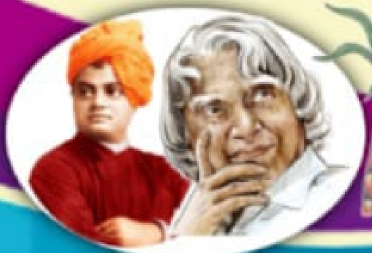

हमारी फसलें

22

सोयाबीन

गोल्डन बीन्स, सुपर फूड प्रचलित इसके नाम,
मानव स्वास्थ्य एवं पोषण के आता बेहद काम।
विभिन्न खाद्य पदार्थ के रूप में होता उपयोग,
भोजन में इसके प्रयोग से रहते सब निरोग।।

लेग्यूमिनेसी फैमिली का सदस्य कहलाता,
खरीफ़ के मौसम में सोयाबीन बोया जाता।
गरम जलवायु और दोमट मिट्टी है अनुकूल,
फलियाँ लगने तक 3-4 सिंचाई मत जाना भूल।।

पत्ते झड़ें, सूखें फली होती तब कटाई,
आकारानुसार दानों की होती फिर छँटाई।
दानों से बनती सोयाबड़ी, दूध और तेल,
पौष्टिकता और स्वाद में नहीं है कोई मेल।।

शाकाहारियों के लिए है प्रोटीन का वरदान,
कार्बोहाइड्रेट, वसा के गुणों की भी यह खान।
खेती हेतु महाराष्ट्र और राजस्थान हैं विशेष,
पर उत्पादन में नम्बर एक है मध्य प्रदेश।।

रचना
डॉ० रैना पाल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8) आमगांव,
जगत, बदायूँ

Mission Shikshan Samvad

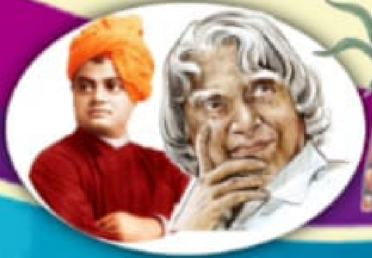

हमारी फसलें

23

पिपरमिंट

पिपरमिंट का उत्पादन होता जहाँ विशेष,
वह राज्य हैं कश्मीर और उत्तर प्रदेश।
बदायूँ, रामपुर, बरेली, लखनऊ क्षेत्र हैं खास,
अम्बेडकर नगर, बाराबंकी, फैजाबाद आते कृषि को रास।।

ऊष्ण और समशीतोषण जलवायु अनुकूल,
यह छोटा हरा सा पौधा और बैंगनी हैं फूल।
कालका शिवालिक और गोमती हैं किस्मों के नाम,
दर्द निवारण, उल्टी नियन्त्रण में आता है काम।।

मेंथा पिपरशिया है इसका वैज्ञानिक नाम,
पित्तवर्थक, जीवाणुरोधी होते अन्य काम।
दोमट और बलुई मिट्टी है कृषि उपयोगी,
पिपरमिंट का तेल लगाते हैं सदा दंत रोगी।।

ठण्डी-ठण्डी टॉफी इसकी मन ललचाती,
टूथपेस्ट इसका देता साँसों को ताजगी।
सारे भाग उपयोगी है इसके तना, फूल व पत्ती,
बहुत क़ीमती होती है पिपरमिंट की खेती।।

रचना
फ़राह हारून "वफ़ा" (प्र०अ०)
प्रा० वि० मढ़िया भांसी
सालारपुर, बदायूँ

हमारी फसलें

24

शकरकन्द

शकरकन्द मन को बहुत है भाती,
इपोमोएआ बातातास भी कहलाती।
कच्ची या इसे उबालकर खाते,
चिप्स भी इसके बनाये हैं जाते।।

जमीन के अन्दर उगायी जाती,
मार्च में यह बोयी है जाती।
इसकी बेल पत्तों से ढक जाती,
पाँच माह में फसल तैयार हो जाती।।

सेहत के लिए है बड़ी गुणकारी,
दूर भगाती है सारी बीमारी।
पीली, श्वेत, लाल रंग की होती,
स्वाद में यह मीठी है होती।।

बच्चे और बूढ़े सभी को है भाती,
इसे खाने में कठिनाई नहीं आती।
खाकर इसे सेहत बन जाती,
यह खरीफ की फसल है होती।।

रचना-
रचना सिंह वानिया (स०अ०)
प्रा० वि० आलमपुर बुजुर्ग,
वि० क्षेत्र- रजपुरा, मेरठ

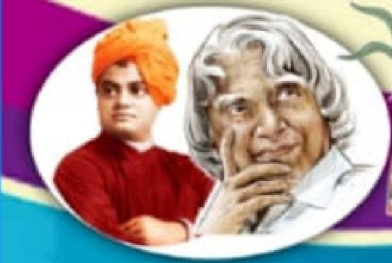

हमारी फसलें

25

चाय

द्वार पे आये अतिथि का,
खूब किया सत्कार।
अगर नहीं उन्हें चाय पिलाया,
तो सब कुछ बेकार।।

चीन और भारत में होती,
चाय की खेती सर्वाधिक।
श्रीलंका है चाय का,
सबसे बड़ा निर्यातक।।

अक्टूबर और नवम्बर में,
करते पौधे की रोपाई।
पूरे वर्ष में तीन बार,
कर सकते पत्ती तुड़ाई।।

गर्म-आर्द्र जलवायु उत्तम,
10-35 डिग्री तापमान।
1800-2500 किलोग्राम,
उपज प्रति हेक्टेयर बागान।।

रचना-
राज कुमार शर्मा [प्र०अ०]
उ० प्रा० वि० चित्रवार
क्षेत्र- मऊ, जनपद- चित्रकूट

मिशन शिक्षण संवाद

हमारी फसलें

रचनाकारों की सूची

01- शिखा वर्मा, सीतापुर
02- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
03- डॉ० नीतू शुक्ला, उन्नाव
04- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
05- सतीश चन्द्र, सीतापुर
06- सीमा मिश्रा, फतेहपुर
07- रश्मि शुक्ला, उन्नाव
08- भुवन प्रकाश, सीतापुर
09- रीना काकरान, मेरठ
10- इला सिंह, फतेहपुर
11- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
12- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
13- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
14- स्नेह लता, मेरठ
15- ज्योति सागर, बागपत
16- नीलम भास्कर, बागपत
17- मन्जू शर्मा, हाथरस
18- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
19- मोना शर्मा, मेरठ
20- माला सिंह, मेरठ
21- नैमिष शर्मा, मथुरा
22- डॉ० रैना पाल, बदायूँ
23- फ़राह हारून, बदायूँ
24- रचना सिंह वानिया, मेरठ
25- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा

2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- काव्य मंजरी टीम